

# राजगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म संकल्पना व समायोजन के प्रभाव का अध्ययन

सहायक प्रो. श्रीमती पल्लवी नागर और स्वाति यादव

अरिहंत कॉलेज, इन्दौर

## सारांश

शिक्षा को मानव जीवन का आधार स्तम्भ माना जाता है। शिक्षा के अभाव में मानव जीवन के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। यह मानव जीवन की उत्कृष्टता एवं उच्चता को सुनिश्चित करती है। प्राचीन काल में शिक्षा का समाज के कार्यों एवं उद्देश्यों के अनुसार आत्मज्ञान एवं आत्म प्रकाश का साधन माना गया है। थोड़े में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाती है। प्रस्तुत शोध में राजगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म संकल्पना व समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया गया। कक्षा 8 के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन का सांख्यिकी गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए हैं। गणना के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एवं उनकी अंतर्क्रिया में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## संदर्भ :-

- [1]. Mishra Rakesh kumar ( 2002 ) :- “A study of the pupil Teachers, their teaching Attitude And the effect of their efficiency’ unpublished Ph.D. Purvanchal University Janupur.
- [2]. अग्रवाल, सुभाष चन्द्र (2002). अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ, वॉल्यूम : 21, अंक : 1।
- [3]. सिंह एवं कुमार (2009) “कॉन्वेंट स्कूल (अंग्रेजी माध्यम) व सरस्वती स्कूल (हिन्दी कॉन्वेंट स्कूल (अंग्रेजी माध्यम) व सरस्वती स्कूल (हिन्दी माध्यम) के शिक्षकों पर उनकी भावात्मक बुद्धि” जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 43 (1)।
- [4]. श्रीकला, (2010) ने, श्रीकला, (2010) ने, “इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ टीचर एज्यूकेचर्स “इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ टीचर एज्यूकेचर्स” जर्नल ऑफ “ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 43 (1)।
- [5]. स्वरूप, डा. एम. रतना (2015). इण्टरमीडियट स्तर के विद्यार्थियों के घर समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। ई-एजुकेशन वॉल्यूम नम्बर 6, इश्य -2।